फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियाँः संस्कृति और संवेदना

*डॉ. सत्य नारायण शर्मा

Abstract

फणीश्वर नाथ रेणु के कथा साहित्य में लोक संस्कृति मूलक पक्ष और समाज के प्रति आग्रह मिला है। उनके साहित्य में लोक संस्कृति का अर्थ नगर और ग्राम जीवन दोनों को मिलाकर बनता है। संवेदना के स्तर पर रेणु ने लोक संस्कृति पर ज्यादा ध्यान दिया है। मिथिला अंचल के जन–जीवन, वहाँ की जन–चेतना, वहाँ की जीवन विधियों इन सबके प्रति वे सजग रहे है। रूप–रस–गन्ध और स्पर्श इन सबके प्रति जागरूकता उनकी कहानियों में देखी जा सकती है।

रेणु की कहानियों में भारतीय इतिहास के उस काल की कथा कही गयी है। जिसमें मरणासन्न सामन्तवाद उभरते पूँजीवाद के चपेटों के आगे अपने को असंभव पाता है। गाँवों का टूटना इसी परिवर्तन का लक्षण है।

रेणु की दृष्टि में शहर औद्योगीकरण और पूँजीवाद का ही प्रतीक नहीं, उस खोखली और आधारहीन जीवन पद्धति का भी प्रतिनिधित्व करते है। जो हमारे जनपदों के लोक जीवन की सहजता और कलात्मकता को धीरे–धीरे लीन कर रही है। रेणु की 'विघटन के क्षण' और 'उच्चाटन' कहानी में जहाँ देहाती युवकों का शहर की चकाचौध से आकृष्ट होकर गाँव से भागने की दुखद स्थिति का चित्रण है। वही 'रसप्रिया' ठेस' और 'भित्तिचित्र की मयूरी, कहानियों में गाँव में रची बची लोक कलाओं के ह्रास और लोक कलाकारों के उपेक्षित जीवन की करूण स्थिति पाठकों के सामने उभरती है।

'करमा' के माध्यम से बाबूओं की जिन्दगियों का वर्णन–स्टेशन से जुड़े जीवन का जो वर्णन किया है वह वहाँ के वैशिष्टय को उभारता है। किस्सागोई के रूप में करमा का मस्ताना बाबा, पैंटमान जी की घरवाली आदि का किस्सा वहाँ की संस्कृति और गाँव की गंध को ही अभिव्यक्त करता है।

''गाँवों के प्रति उनके नेह छोह के कारण ही विघटता के क्षण की चुरमुनिया और विजयादि के माध्यम से कहा गया है। 'सब शहर चले जायेगें तो गाँवों का क्या होगा उनकी देखभाल कौन करेगा।[1]

ग्राम जीवन के प्रति रेणु की मोहाशक्ति यद्यपि प्रबल है किन्तु रेणु ग्राम नगर बोध दोनों को समान्तर रखकर चले है। उन्होंने दोनों को जीया था उसमें ग्राम के प्रति अधिक आकर्षण मिलता है।

''उच्चाटन का राम विलासिया कहता है पटना कहो या दिल्ली जो मजा अपने गाँव में हे, वह इन्द्रासन में भी नही'।[2]

लोक संस्कृति को अभिव्यक्त करने का एक आवश्यक तत्व लोक कला की पहचान है। जो जीवन के वैशिष्टय को उजागर करती है। लोक कला से अभिप्राय सामाजिक एवं सांस्कृति जीवन में व्याप्त लोक कला, संगीत, नृत्य आदि की पहचान है। ग्राम जीवन के लय रेणु की कहानियों में सर्वत्र मिलती है।

''लोक जीवन में व्याप्त बंगाल की पटुआकला और मधुबनी आर्ट शैली का परिचय उनकी ठेस और 'भित्ति चित्र की मयूरी' नामक कहानी में मिलता है। देवता की मूर्ति बनाना और रंग द्वारा उसे इस तरह उकेरना कि वह सजीव लगे।''[3]

अर्थ केन्द्रित समाज और बदलते जीवन–मूल्यों में इन कलाओं का ह्रास हुआ है। अर्थ केन्द्रित समाज में जिस तरह से इन कलाओं को बेकार किया है उसी को रेणु ने वाणी दी है। ठेस कहानी को सिरचन को गाँव वाले जानते है कि सिस्वन की जैसी सतरंगी चिकें और शीतलपाटी बाजार में बहुत मिलती है। सिरचन अपनेपन का भूखा है। जब उसके आत्म –सम्मान पर चोट लगती है तो वह अधूरा कार्य छोड़कर चला जाता है। मिथिला के जन–जीवन में व्याप्त लोक संगीत और नृत्य का रूप उनकी संस्कृति को उजागर करती है।

'संगीत के पारखी कलाकार रेणु की लोक कला के प्रति सहजता या सरसता उनकी कला मर्मज्ञता को अभिव्यक्त करती है उनके पात्र ताल से बेताल नहीं होते क्योंकि वे जानते है। कि उन्हें कहाँ क्या करना है।

रेणु की कहानियों के पात्र आम आदमी, मामूली व्यक्ति और छोटे लोग ही जिनके सुख–दुख को लेकर लेखक ने कहानियों का ताना–बाना बुना है। रेणु की कहानियों के पात्र ग्रामीण परिवेश की इस वर्ग की कहानियों में 'तीर्थोदक', 'नित्य लीला', तीसरी कसम', 'पंचालाइट', 'सिर पंचमी का सगुन', 'लाल पान की बेगम', 'आदिम रात्रि की महक', 'संवादिया, 'आजाद परिन्दे', 'जडाऊ मुखड़ा', 'प्रजा सत्ता' आदि शहरी परिवेश की कहानियाँ छोटे लोगों के सुख–दुखों को अभिव्यक्त करती है।

''पंचलाइट' कहानी में गाँव की महतों टोली के पंच जैसे–तैसे रूपये इक्टठे करके एक पंचलाइट अर्थात् पैट्रो मैक्स खरीद लेते है। यह बात सारी टोली के लिए अभूतपूर्व उत्साहवर्धक और सुखद घटना है किन्तु जब पता चलता है कि जात बिरादरी में कोई भी व्यक्ति पैट्रौमैक्स जलाना नहीं जानता उनका सारा उत्साह दुख में बदल जाता है।''[4]

इस वर्ग की कहानियों में कुछ ऐसी भी है जिनमें अकेलेपन का बोझ ढोने वाले व्यक्तियों की जीवन में जम जाने की लालसा पाने की प्यास मुखर हो उठी है। तीसरी कसम, आदिम रात्रि की महक और कस्बे की लड़की ऐसी कहानियाँ है।

लोक जीवन की विविधिता और सरसता

रेणु के कथा साहित्य में लोक जीवन के अनेक पहलुओं के कारण उनकी कहानियों में विविध तरह के रूप देखने को मिलते है। उनकी कहानियों में अभिजात्य वर्ग के पात्रों के मोह को त्यागकर, लघु से लघु दिखाने वाले व्यक्ति को कथा का आधार बनाया है।

उन्होंने गरिमा और संस्कृति के मोह को त्यागकर यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत किया है।

रेणु ने अपनी कहानियों में गाँवों के हलवाहों, चरवाहों, गवैया–धरैया और नदियों को अद्‌भुत वर्णन किया है। लोक जीवन के बिखरे हुए वैविध्यपूर्ण वर्ण फर्णश्वरनाथ रेणु की कहानी की विषय–वस्तु है। ''लाइटर' बेचने वाले सामान्य व्यक्ति का व्यक्तित्व भी प्रभावित कर जाता है। जिसमें अग्नि संचार करने की क्षमता है। नयी क्रांति की आग कहीं भी फूट सकती है। ये सभी बातें सामान्य जीवन में रोज देखने को मिलती है किन्तु साहित्य में उनकी सृष्टि द्वारा जिस रूप का परिचय रेणु ने कराया है वह अनुकरणीय है।

रेणु ने मानवीय जीवन का यथार्थ रूप उभार कर कहीं प्रेम का विशुद्ध रूप दिखाया है तो कहीं ग्राम और नगर को समानान्तर दिखाया है। उन्होंने शीर्षकहीन घटनाओं के महत्व को नकारा नहीं है। अपितु जीवन के आगे लगते प्रश्न

चिह्न के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया है।

अज्ञेय ने लिखा है – ''कितनी खरी थी रेणु की यह दुनियाँ जिसे वे कितनी निरायास ढ़ंग से मूर्त कर देते थे। कितनी अचूक थी उसकी पकड़ साई बाबा लोग सुना है कि हवा से हर बार चुटकी भर भभूत ले आते है पर हर बार वहीं भभूत तो आती है और रेणु थे कि हर बार हवा में हाथ बढ़ाते थे और पकड़ लाते थे एक नया अभूतर्पूव पंछी जिसे देखकर हम कहें कि पहले कभी नहीं देखा लेकिन पहचाने कि अरे इसे तो रोज देखते है।''[5]

रेणु की लोक–जीवन में वैविध्य की सार्थकता पर नजर डालते हुए नागार्जुन ने कहा है ''रेणु के 'अगिन खोर' काव्य संग्रह तक अनेक पात्र आये उनमें प्रत्येक तबके के लोगों का परिचय मिलता है। उन्होंने प्रत्येक पात्र को बारीकी से तराशा है। उनके साहित्य में छोटी–छोटी खुशियाँ, तुनुक–मिजाजी के छोटे–छोटे क्षण, राग–द्वेष के उलझे हुए धागों का गुत्थियाँ, रूप–रस–गंध, स्पर्श और नाद के छिटपुट चमत्कार और न जाने क्या–क्या व्यंजनायें छलक पड़ती है।''[6]

प्रेमपरक मूल संवेदना होने के कारण रेणु की कहानियों में विशेष रूप से लोक जीवन में सरसता उत्पन्न करने वाली प्रेम की अभिव्यक्ति मिलती है। ''ठुमरी'' संग्रह की सभी कहानियाँ स्वर–धर्मो होने के कारण प्रेम की अभिव्यंजना करती है। रेणु ने स्वयं जीवन में प्रेम की विविध स्वरूप देखे किन्तु कहीं भी विसंगति उत्पन्न नही हुई।''प्रेम की यही सरसता' सिंथाय के जीवन में दिखती है। जहाँ माधों की माँ नई अठन्नी की तरह चमकती है और बूढ़ा मिस्त्री काम करते हुए अपने सिर पंचमी के साकार सगुन को जी भरकर निहारता है।''[7]

''शीर्षकहीन' कहानी में भी प्रेमपरक अभिव्यक्ति का नया मिलता है जो स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों पर प्रश्न–चिन्ह लगाता है। ''श्रावणी दोपहरी की धूप'' कहानी दाम्पत्य पर आधारित प्रणय के विकास–ह्रास पुनः विकास पर आश्रित है। मूलतः प्रणय संवेदना दाम्पत्य जीवन में प्रमुखता बनाये रखती है। यही इस कहानी का प्रतिपाघ है।''[8]

अतः रेणु की कहानियों में जीवन में उत्पन्न नीरसता और शुष्क हृदय को अंकुरित करने वाली नैसर्गिक प्रेम की भावना प्रमुख है।

लोकरंजन की उपादेयता

अनुरंजन के अर्थ की दृष्टि से भाषा–विज्ञान का एक पुराना सिद्धांत है। ''श्रम परिहरण मूलकता'' अर्थात् लोक जीवन में श्रम करते समय उसकी थकावट को परिहार करने के लिए अनुरंजनकारी किसी न किसी प्रक्रिया को सहारा देना। खेत जोतते समय गाना गाना, नाव चलाते समय हैया रे हैया कहना, चक्की चलाते समय जंतसार नामक गीत जो कि मिथिला में प्रसिद्ध है जो कष्ट देने वाली सास के प्रति घृणा और नव–युवती दुलहनियों के अथक श्रम को देखकर करूणा उत्पन्न करता है। खेत जोतते हुए गीत गाना उल्लास का सूचक है। इसी प्रसंग में पंचकौडी मिरदंगिया कहता है'' ऐसी दुपहरी में चुपचाप काम कैसे किया जा सकता है।''

हमारे देश में सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा एकता बनाये रखने का प्रयास हमेशा से किया जाता रहा है। इसी कारण भारत की आत्मा में बसे गाँवों में पर्व, उत्सव, त्यौहारों का महत्व आज भी कम नहीं है। शाम को दिन भर के हारे थके लौटने पर ढ़ोलक की थाप पर आल्हा गाया जहाँ उल्लासित मन का सूचक है। वहीं मन की अनेक चिन्ता और धूप एवं वर्षा में किये श्रम की थकान को किसान भूल जाते है।

रेणु के कथा साहित्य में ग्राम–जीवन में संगीत परम्परा का एक रूप कीर्तन है। कीर्तन जहाँ एक ओर अनुरंजनकारी है वहीं वह इस अर्थ में उपादेय भी है। कि कीर्तन द्वारा सांयकाल में श्रम परिहरण मूलकता प्रतिपादन किया जाता है। वहाँ आवाज देकर में, किसी को पुकारने में भी एक विशेष प्रकार की लय मिलती है। ''.....रे.....मो.....ह.....

...ना.....रे।

बैल.....कहाँ.....है.....रे ?''

आँचलिक कथाकार रेणु ने अपनी कहानियों में लोकरंजन की उपादेयता का मार्मिक वर्णन किया है। वास्तव में ग्रामीण जीवन में लोक रंजन की परम्परा आज भी मिलती है। लोग अनुरंजन भी इसलिए करते है कि खोयी हुई शक्ति की पुनः प्राप्त कर उसे उपादेय बना सके। जीवन के सुख–दुख में परस्पर सहयोग आदि की भावना इसी उद्देश्य मूलकत्म् की अभिव्यक्ति करती है।

लोक जीवन में व्याप्त रूढ़ियों के प्रति आक्रोश

ग्रामीण जीवन में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह के स्वर रेणु की कहानियों में उभर कर आयें है। सामाजिक जीवन और उसकी व्यवस्था के प्रति क्रान्तिकारी रहे रेणु का रूढ़ियों और अंध विश्वासों के माध्यम से होते हुए शोषण के प्रति तीखा आक्रोश देखने को मिलता है।

''किस अघोरी के अखाड़े पर ले गया था'' अंधविश्वास के प्रति रेणु के आक्रोश को ही अभिव्यक्त करता है।

''तीर्थोदक'' कहानी में तो इसी धार्मिक अंध विश्वास और मान्यताओं का पर्दाफाश किया गया है। पण्डों की नजर अपने जजमान पर हमेशा रहती है। ''देखें कितनी अशर्फियाँ लुटाती है दक्षिणा में''[9]

''काशी जी आकर भी लोग चोरी–चकारी करते है? डौमन की माँ की गठरी से, कुर्माटोली की दर्समन की खोयी हुई रूद्राक्ष की माला निकली।'' यहाँ रेणु ने पुष्याथियों पर तीव्र कटाक्ष किया है।

''पण्डितों के प्रति आक्रोश को व्यक्त करते हुए रेणु का किसन कहता है गर्ग (पण्डित) को क्या? उनकी बात दून करके सुनाता है। दक्षिणा प्रणामी से उसकी गठरी झोली भरती है।''[10]

छींकनें पर किसी शुभ कार्य को आरम्भ नहीं करना' गुरूवार, शुक्रवार को ठीक दिन नहीं मानना आदि बातों के प्रति रेणु की कहानियों में आक्रोश मिलता है। ''काक चरित'' कहानी तो पूर्णरूप से अपशकुन की कहानी है। जो कुछ भी बुरा घटित होता है उसका भार अंध विश्वासों पर डाल दिया जाता है।''[11]

धार्मिक अंधविश्वासों और रूढ़ियों के साथ–साथ रेणु ने सामाजिक रूढ़ियों पर भी मार्मिक प्रहार किये है। बदलते जीवन संदर्भों में कोई भी रूढ़ि सहीं टिकेगी इसी को संकेतित करते हुए रेणु ने लिखा है–''मशीन से चलने वाली धरधराती हुई धौकनी फूत्कार उठी फू–उ–उ–––कहाँ का टेढ़ा फाल। मशीन के सामने कोई रूढ़ि नही टिकेगी।[12]

हिन्दु परिवार में लड़की की जाति के लिए जिस प्रकार की भावना देखने को मिलती है। नित्यलीला में उसी को योगमाया द्वारा व्यक्त किया है। ''फैकी हुई को एक बार नहीं, दस बार फैकों गोद से.....'न जाने मेरा जन्म किस घड़ी में हुआ है कि सभी दुत्कारते है जन्म से।''[13]

इस प्रकार हम देखते है कि रेणु की कहानियों में सामाजिक धार्मिक रूढ़ियों के प्रति आक्रोश के साथ–साथ उनमें नवीनता के प्रति आग्रह भी मिलता है। उनके पात्रों में विद्रोह की भावना भी उभर कर सामने आई है।

रेणु ने अपनी कहानियों मे सामंती व्यवस्था के प्रति व्यंग्य एव रोष के भाव दिखाई देते है। उनकी कथा साहित्य में शोषक के प्रति घ्रणा एवं शोषित के प्रति सहानुभूति के भाव प्रकट होते है। ग्रामीण परिवेश में जीवन व्यतीत करने के कारण रेणु ने सामंती व्यवस्था के कष्टों को झेला था उसी को उन्होने अपनी कहानियों मे व्यक्त किया है। 'जलवा', 'आत्म साक्षी', 'आजाद परिन्दे', आदि ऐसी कहानियाँ है जिनमें सामन्तवादी व्यवस्थ के प्रति व्यंग्य के भाव

मिलते है। "जिस देश की आजादी के लिए फातिमा ने अपनी जान लगा दी उसी समाज के वहशियों ने उन पर कहर ढ़ाये। इन जालिमों ने मुझ पर क्या–क्या कहर ढ़ाये यह तुम्हे क्या मालूम? और किस दरवाजे की कुंदी नहीं खट–खटायी किन्तु दिल्ली से पटना तक के खुदाबंदों ने अम्ल की दवा करने की सलाी दी।"[14]

इस प्रकार जुल्म की यह कहानी सामन्ती व्यवस्था पर ही नहीं अपितु स्वतंत्रता के बाद की स्थिति पर करारी चाट करती है।

डॉ. पूर्णदेव ने लिखा है–"1947 के पहले की परतंत्रता विदेशी स्वार्थो की परतंत्रता थी और बाद की देशी स्वार्थों की। स्वार्थ से लिप्त राजनीति बिहार की जनता के मुँह पर निरन्तर एसिड़ की बोतलें ड़ालती जा रही हैं। जिससे जनता का चेहरा झुलस कर काला हो गया है। उसकी आँख खराब हो गयी है।"[15]

"आत्मसाक्षी" का गुणपत सोचता है "सुरज में भी दरार पड़ गयी है दुनियाँ की हर चीज आज दो भागों में बटी हुई सी लगती है। हर व्यक्ति के दो टुकड़े दो मुखेड़ है। जिसने 35 वर्षों तक देश की सेवा की उसके लिए किसी साखी की जरूरत नहीं है। वह स्वंय उस दर्द का आत्मसाक्षी है।"[16]

रेणु ने आजाद परिन्दे कहानी में अमीरी के प्रति बढ़ती लालसा, नवयुवकों के मोह को व्यक्त करते लिखा है–"अरे एक बार कम्पनी में घुसने दे, तब देखना बापों को।"[17]

सत्य को छिपाने की प्रवृत्ति हमारे समाज की दुर्बलता है जिसका त्याग करके सत्य को प्रस्थापित करना होगा तभी समाज की बुराईयों को दूर किया जा सकता है।

नर–नारी के सम्बन्ध समाज की मर्यादाओं मे बाध कर रह गये है। उससे समाज में अनेक घटनाएं घटित होती है। परन्तु लोग इस दर्द को दिल में लिये चलते है। इस यथार्थ को मर्यादाओं की राख से ढ़के–ढ़के रह जाते है।

"मान के रंग" कहानी मे कथाकार रेणु का आक्रोश उभर कर सामने आया है–"तीन सौ रूपये के वाउचर पर दस्तखत करके डेढ़ सौ रूपये महावार, तीन महीने बाद पाता हूँ।"[18]

रेणु की कहानियों में संस्कृति और संवेदना प्रमुख रूप परिलक्षित हुई है जहाँ उन्होने समाज, धर्म और राजनीति की विसंगतियों को उजागर किया है। उन्होने वैचारिकता को प्रतिपाद्य बनाकर उस यथार्थ को प्रस्तुत किया है निष्कर्षता कहा जा सकता है कि रेणु स्वस्थ दृष्टि वाले कथाकार ये जिन्होने ग्रामीण परिवेश एवं उससे जुडी संस्कृति के प्रत्येक पहलु को अपनी कहानियों में उभारकर रचनात्मक प्रभुत्व का प्रदर्शन किया है। रेणु ने परिवेश की विसंगतियों में सहजता का परिचय देकर विशिष्ट दृष्टिकोण से उनको व्यक्त किया है। अपनी भाषा में अपनी दिल की बात को सम्प्रेष्ति करने वाले रेणु की संवेदना ग्रामांचल के सम्पूर्ण व्रत को यथार्थ रूप में उपस्थित करती है। इसलिए रेणु अपनी कहानियों में ग्रॉव के अति निकट परिचित और विश्वासनीय लगते है।

***व्याख्याता**
विभाग हिन्दी
स्व. राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय
बाँदीकुई (दौसा)

संदर्भ

1. आदिम रात्रि को महक कहानी संग्रह–'विघटन के श्रद्धा कहानी' पृ०18 लेखक–फणीश्वरनाथ रेणु
2. आदिम रात्रि को महक कहानी संग्रह–'उच्चाटन कहानी' पृ०108 लेखक– फणीश्वरनाथ रेणु

3. आगिनखोर–कहानी संग्रह–'भित्तिचित्र की गयुनी' पृ० 44 लेखक – फणीश्वरनाथ रेणु
4. ठुमरी–कहानी संग्रह–'पंचलाईट' पृ० 83 लेखक – फणीश्वरनाथ रेणु
5. रेणु संस्मरण और श्रद्धांजलि–लेखक– अजेय पृ० 03
6. रेणु संस्मरण और श्रद्धांजलि–लेखक– नागार्जुन पृ० 90
7. ठुमरी–कहानी संग्रह–'सिरपंचती का सगुन' लेखक–रेणु पृ० 2
8. श्रावणी दोपहरी की धुप–संपादक भारत यायावर–पृ० 86
9. ठुमरी कहानी संग्रह–'तीर्थीदक' लेखक – रेणु पृ० 48
10. ठुमरी कहानी संग्रह–'नित्य लीला' कहानी–लेखक–रेणु पृ० 59
11. आदिमरात्रि की महक संग्रह–'काकचरित' कहानी–लेखक–रेणु पृ० 113
12. 'ठुमरी'–कहानी संग्रह–'सिरपंचती का सगुन' लेखक–रेणु पृ० 96
13. 'ठुमरी'–कहानी संग्रह–'नित्यलीला कहानी' लेखक–रेणु प० 70
14. पुरानी कहानी नया पाठ–लेखक–सुरेन्द्र पृ० 72–73
15. रेणु का आंचालिक कथा साहित्य–लेखक–डॉ. पूर्णदेव पृ. 36
16. 'आत्मसाक्षी' कहानी लेखक–रेणु पृ० 07
17. आजाद परिन्दे कहानी लेखक–रेणु पृ० 03
18. अगिन खोर संग्रह–मन के रंग कहानी लेखक–रेणु पृ० 93